Journal of Research and Development

Peer Reviewed International, Open Access Journal.

ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

Original Article

पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच महिलाओं के चुनाव को प्रभावित करने में मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका

डॉ कुमारी निशा
सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग,
वीर कुंवर सिंह कॉलेज, धारूपुर रोहतास
Email-ratannisha123456@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170808
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 8(B)|
Pp. 51-58
Aug 2025
Submitted:11 July. 2025
Revised: 26 July. 2025
Accepted: 11 Aug. 2025
Published: 31 Aug. 2025

शोधसार:

यह अध्ययन पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच महिलाओं के चुनाव को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों की पड़ताल करता है। इसका उद्देश्य अंतर्निहित प्रेरणाओं, जोखिम की धारणाओं, आत्म–प्रभावकारिता और सामाजिक प्रभावों को समझना है जो महिलाओं को विशिष्ट उद्यमशीलता पथों की ओर ले जाते हैं। पारंपरिक उद्यमिता की विशेषता स्थापित उद्योग और व्यावसायिक मॉडल हैं, जिनमें अक्सर कम जोखिम और बाज़ार तक पहुँचने के स्पष्ट रास्ते होते हैं। इसके विपरीत, गैर–पारंपरिक उद्यमिता में उभरते क्षेत्रों में नवीन, अक्सर तकनीक–संचालित उद्यम शामिल होते हैं, जो आमतौर पर उच्च जोखिम से जुड़े होते हैं, लेकिन साथ ही विघटन और विकास की उच्च क्षमता भी रखते हैं। यह शोध यह मानता है कि जोखिम प्रवृत्ति, नियंत्रण का स्थान, आत्म–प्रभावकारिता, असफलता का भय और उपलब्धि प्रेरणा जैसी मनोवैज्ञानिक संरचनाएँ इस निर्णय लेने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन उद्यमशीलता के चुनाव पर कथित सामाजिक समर्थन और लैंगिक रूढ़िवादिता के प्रभाव का पता लगाएगा। यह शोध मिश्रित–पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करेगा, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा संग्रह तकनीकों का संयोजन किया जाएगा ताकि मनोवैज्ञानिक कारकों की व्यापक समझ प्रदान की जा सके। मात्रात्मक चरण में विभिन्न उद्योगों और उनके उद्यमों के विभिन्न चरणों में कार्यरत बिहार के 38 जिलों से महिला उद्यमियों के एक बड़े समूह (N=500) का सर्वेक्षण किया जाएगा। सर्वेक्षण में निम्नलिखित को मापने के लिए मान्य मनोवैज्ञानिक पैमानों का उपयोग किया जाएगा। निष्कर्ष महिला उद्यमशीलता व्यवहार की गहरी समझ में योगदान देंगे, और विविध उद्यमशीलता उद्यमों में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए लक्षित सहायता कार्यक्रमों और नीतियों को सूचित करेंगे। मात्रात्मक और गुणात्मक, दोनों चरणों के निष्कर्षों को एकीकृत करके एक समग्र समझ प्रदान की जाएगी। अंततः, यह कहा जाएगा कि उद्यमशीलता का जुनून और आंतरिक प्रेरणा शक्तिशाली प्रेरक हैं। जो महिलाएँ किसी विशिष्ट समस्या या नवाचार के प्रति गहरी लगन रखती हैं, उनमें कथित बाधाओं को पार करने और गंभीर चुनौतियों का सामना करते हुए भी गैर–पारंपरिक उद्यमों को अपनाने की संभावना अधिक होती है। इन मनोवैज्ञानिक बारीकियों को समझना प्रभावी हस्तक्षेपों और नीतियों को डिज़ाइन करने के लिए आवश्यक है जो उद्यमशीलता के अवसरों के पूरे स्पेक्ट्रम में महिलाओं की भागीदारी और सफलता को प्रोत्साहित करें।

शब्द कुंजी: *पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता, मनोवैज्ञानिक कारक, उद्यमशीलता, व्यावसायिक मॉडल।*

प्रस्तावना

महिलाओं का उद्यमिता अपनाने का निर्णय, चाहे वे पारंपरिक हों या गैर–पारंपरिक, मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है। ये कारक उनके इरादों, प्रेरणाओं और व्यवसाय शुरू करने और उसे बढ़ाने में निहित चुनौतियों पर विजय पाने की उनकी क्षमता को आकार देते हैं। मनोवैज्ञानिक कारक महिलाओं के उद्यमशीलता के इरादों, प्रेरणाओं और चुनौतियों का सामना करने की उनकी क्षमता को आकार देकर पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच उनके चुनाव को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन कारकों में व्यक्तित्व लक्षण, आत्म–नेतृत्व, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आत्म–संदेह व सामाजिक अपेक्षाओं को प्रबंधित करने की क्षमता शामिल है। शोध अध्ययन का उद्देश्य है, महिलाओं के उद्यमशीलता संबंधी विकल्पों को समझने का एक महत्वपूर्ण पहलू उन मनोवैज्ञानिक कारकों की खोज करना है जो उनकी निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, खासकर पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमशीलता उपक्रमों के बीच चयन करते समय।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Quick Response Code:

Website:
https://jrdrvb.org/

DOI:10.5281/zenodo.17205113

OPEN ACCESS

Address for correspondence:
डॉ कुमारी निशा, सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, वीर कुंवर सिंह कॉलेज, धारूपुर रोहतास

How to cite this article:
निशा,. कुमारी . (2025). पारंपरिक और गैर-पारंपरिक उद्यमिता के बीच महिलाओं के चुनाव को प्रभावित करने में मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका. Journal of Research and Development, 17(8(B)), 51–58. https://doi.org/10.5281/zenodo.17205113

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

पारंपरिक उद्यमिता अक्सर स्थापित व्यावसायिक मॉडलों और उद्योगों को संदर्भित करती है, जबकि गैर–पारंपरिक उद्यमिता में नवीन, अक्सर तकनीक–चालित, या सामाजिक रूप से प्रभावशाली उद्यम शामिल होते हैं जो मौजूदा मानदंडों को चुनौती देते हैं। यह परिचय उन बहुआयामी मनोवैज्ञानिक आयामों पर गहराई से चर्चा करेगा जो इस उद्यमशीलता द्वंद्व में महिलाओं की प्राथमिकताओं और विकल्पों को आकार देते हैं, और यह जाँच करेंगे कि आत्म–प्रभावकारिता, जोखिम की धारणा, असफलता का डर, सामाजिक समर्थन और लैंगिक भूमिका अपेक्षाएँ कैसे परस्पर क्रिया करके उनके उद्यमशीलता पथ को प्रभावित करती हैं।

पारंपरिक बनाम गैर–पारंपरिक चयन पर प्रभाव

कारक	पारंपरिक उद्यमिता की ओर प्रवृत्त	गैर–पारंपरिक उद्यमिता की ओर प्रवृत्त
व्यक्तित्व	अधिक सुरक्षा–उन्मुख, व्यवस्थित	उच्च खुलापन, जोखिम सहनशीलता
प्रेरणा	बाहरी (वित्तीय सुरक्षा, लचीलापन)	आंतरिक (जुनून, नवप्रवर्तन)
आत्म–भावना	मजबूत, लेकिन अक्सर बाहरी Validation पर निर्भर	अत्यधिक मजबूत आत्म–नेतृत्व और आंतरिक विश्वास
आत्म–संदेह और सामाजिक अपेक्षाओं का प्रबंधन	कम जोखिम, स्पष्ट रास्ता	उच्च जोखिम, अनिश्चितता, कम रोल मॉडल
सामाजिक दबाव	अधिक स्वीकार्य और Supported	अक्सर सवालों और संदेह का सामना करना पड़ता है।

शोध उद्देश्य: 1. महिलाओं का उद्यमिता अपनाने का निर्णय, चाहे वे पारंपरिक हों या गैर–पारंपरिक, मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है।

शोध परिकल्पना: H1:- मनोवैज्ञानिक कारक, महिलाओं के उद्यमशीलता के इरादों, प्रेरणाओं और चुनौतियों का सामना करने की उनकी क्षमता और पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच उनके चुनाव को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शोध उद्देश्य: 2. महिलाओं के उद्यमिता अपनाने के निर्णय, में बहिर्मुखता, अनुभव के प्रति खुलापन और कर्तव्यनिष्ठा उद्यमशीलता के इरादे से सकारात्मक रूप से जुड़े हुए होते हैं।

शोध परिकल्पना: H1:- महिलाओं के उद्यमिता अपनाने के निर्णय, में बहिर्मुखता, अनुभव के प्रति खुलापन और कर्तव्यनिष्ठा उद्यमशीलता के इरादे से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है।

कार्यप्रणाली:

एक व्यापक पद्धति में आमतौर पर एक मिश्रित–पद्धति डिज़ाइन शामिल होता है, जिसमें समग्र समझ प्रदान करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान रणनीतियों का संयोजन किया जाता है। प्रस्तावित शोध में एक अनुक्रमिक व्याख्यात्मक मिश्रित–पद्धति डिज़ाइन का उपयोग किया जाएगा। **प्रतिभागी और नमूनाकरण:** लक्षित जनसंख्या बिहार के 38 जिलों से विभिन्न उद्योगों की महिला उद्यमी होंगी। मात्रात्मक चरण के लिए एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया जाएगा ताकि पारंपरिक (जैसे, खुदरा, सेवाएँ) और गैर–पारंपरिक (जैसे, प्रौद्योगिकी, उन्नत विनिर्माण, सामाजिक उद्यमिता) दोनों क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। मात्रात्मक चरण के लिए नमूना आकार सांख्यिकीय महत्त्व सुनिश्चित करने हेतु शक्ति विश्लेषण का उपयोग करके निर्धारित किया जाएगा, जिसका लक्ष्य न्यूनतम 500 प्रतिभागियों का होगा। गुणात्मक चरण के लिए, विविध अनुभवों और दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करने वाले मात्रात्मक प्रतिभागियों के एक उपसमूह का चयन करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण रणनीति का उपयोग किया जाएगा, जिसका लक्ष्य 20–30 गहन साक्षात्कार होंगे। मनोवैज्ञानिक कारकों और उद्यमशीलता विकल्पों को मापने के लिए एक संरचित प्रश्नावली विकसित की जाएगी। **मात्रात्मक डेटा विश्लेषण:** मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज SPSS सांख्यिकीय सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके किया जाएगा। प्रतिभागियों की जनसांख्यिकी और प्रमुख चरों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन, आवृत्तियाँ) का उपयोग किया जाएगा। पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता में महिलाओं के बीच मनोवैज्ञानिक कारकों की तुलना करने के लिए स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण या एनोवा दर्शाया जा सकता है।

तालिका 1:- महिलाओं का उद्यमिता अपनाने के निर्णय में मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध

N=500	पारंपरिक उद्यमिता	गैर-पारंपरिक उद्यमिता	Variance		टी–परीक्षण (दोनों समूहों की तुलना)		एफ–परीक्षण (विचरण की तुलना)	
	मुख्य परिणाम		पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं का विचरण	गैर–पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं का विचरण	टी–मान	पी–मान	एफ –मान	पी –मान
व्यक्तित्व	112.26	74.77	= 171.81	= 87.82	= 23.93	=<0-00000001 (अत्यधिक महत्वपूर्ण)	= 1.97	= 0.121 (गैर – महत्वपूर्ण)

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

प्रेरणा	140.4	22.6	टी–परीक्षण के परिणाम 23-93 पी–मान = (<0.00000001 अत्यधिक महत्वपूर्ण) दर्शाते हैं कि अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एफ–परीक्षण 1.97 पी–मान = 0.121 (गैर–महत्वपूर्ण दर्शाता है कि दोनों समूहों के विचरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, यानी परिणाम स्थिर और विश्वसनीय हैं। ये मनोवैज्ञानिक कारक, व्यक्तित्व लक्षण, आत्म–नेतृत्व, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आत्म–संदेह व सामाजिक अपेक्षाओं को प्रबंधित करने की क्षमता। महिलाओं के उद्यमशीलता के इरादों, प्रेरणाओं और चुनौतियों का सामना करने की उनकी क्षमता को आकार देकर पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच उनके चुनाव को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
आत्म–भावना	123.74	53.36	
आत्म–संदेह	120.5	90.64	
सामाजिक दबाव	110.51	101.24	

ग्राफ 1:- महिलाओं का उद्यमिता अपनाने के निर्णय में मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध

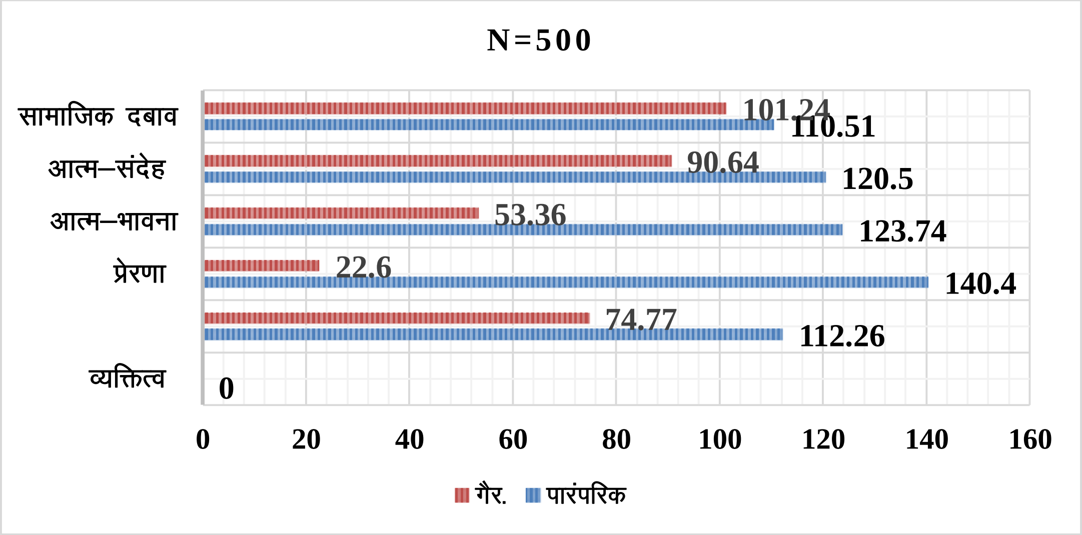

सांख्यिकी डेटा विश्लेषण

जैसा कि तालिका 1 में दिखाया गया है, पारंपरिक उद्यमी व्यवसायों को अपनाने वाली महिलाओं के निर्णय में मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध है। व्यक्तित्व, प्रेरणा 140.4, गैर–पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं में 22.6 पाया गया। पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं में आत्म–भावना, 123.74, पारंपरिक, गैर–पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं में 53.36 पाया गया। पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं में आत्म–संदेह, 120.5, गैर–पारंपरिकउद्यमी महिलाओं में 90.64 पाया पाया। सामाजिक दबाव पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं में 110.51, गैर–पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं में 101.24 पाया पाया। ये सभी लक्षण उद्यमशीलता के प्रयासों के लिए अधिक अनुकूल थे पारंपरिक तथा गैर–पारंपरिक, उद्यमी व्यवसायों को अपनाने वाली महिलाओं के अनुपात में। शोध परिणाम से स्पष्ट संकेत मिला है कि ये मनोवैज्ञानिक कारको का महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ा उद्यमी महिलाओं में। टी–परीक्षण के परिणाम 23-93 पी–मान = (<0.00000001 अत्यधिक महत्वपूर्ण) दर्शाते हैं कि अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एफ–परीक्षण 1.97 पी–मान = 0.121 (गैर–महत्वपूर्ण दर्शाता है कि दोनों समूहों के विचरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, यानी परिणाम स्थिर और विश्वसनीय हैं। ये मनोवैज्ञानिक कारक, व्यक्तित्व लक्षण, आत्म–नेतृत्व, प्रेरणा, प्रतिबद्धता और आत्म–संदेह व सामाजिक अपेक्षाओं को प्रबंधित करने की क्षमता, महिलाओं के उद्यमशीलता के इरादों, प्रेरणाओं और चुनौतियों का सामना करने की उनकी क्षमता को आकार देकर पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच उनके चुनाव को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन से प्राप्त सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, अध्ययन के लिए विचार की गई परिकल्पना सांख्यिकीय आंकड़ों के दृष्टिकोण से सिद्ध होती पाई गई है। शोध अध्ययन से प्राप्त स्टैटिकल डाटा इस ओर इंगित करते हैं कि अध्ययन के लिए मानी गई परिकल्पनाओं को स्टैटिकल डाटा के दृष्टिकोण से हम सिद्ध पाते हैं।

विश्लेषणात्मक व्याख्या; तालिका संख्या 2. के अनुसार:– व्यक्तित्व लक्षण (Personality Traits); खुलापन (Openness to Experience): यह लक्षण गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में जाने के लिए सबसे बड़ा भविष्यवक्ता है। शोध अध्ययन के परिणामों से पता चला कि नई तकनीकों, बाजारों और विचारों के प्रति जिज्ञासा और लचीलापन महिलाओं को उन क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए प्रेरित कर रहा था जहाँ कोई राह नहीं बनी थी। **चेतनाशीलता (Conscientiousness):** यह दोनों प्रकार की उद्यमिता के लिए crucial है, लेकिन इसकी अभिव्यक्ति अलग होती है। पारंपरिक व्यवसायों में यह व्यवस्थित योजना और नियमितता दिखती है, जबकि गैर–पारंपरिक में यह एक जोखिम भरे, अनिश्चित वातावरण में लक्ष्यों पर केंद्रित रहने के रूप में सामने आती है। **बहिर्मुखता (Extraversion):** नेटवर्किंग, ग्राहकों को आकर्षित करने और निवेशकों को पिच करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण। गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में, जो अक्सर पुरुष–प्रधान होते हैं, नेटवर्क बनाने की क्षमता और विचारों को आत्मविश्वास से पेश करना और भी ज़रूरी हो जाता है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

2. आत्म–नेतृत्व (Self-Leadership) यह स्वयं को प्रेरित करने, अपने लक्ष्य निर्धारित करने और अपने कार्यों के प्रति जवाबदेह होने की क्षमता है। शोध अध्ययन में शामिल महिलाएँ जो **आत्म–नेतृत्व की strong sense** रख रही थी अपनी उद्यमशीलता की यात्रा की "कप्तान" बनी हैं। वे गैर–पारंपरिक रास्ते चुनने से कम नहीं डरतीं थी क्योंकि उन्हें अपने निर्णय लेने और उनके परिणामों को उंदंहम करने में विश्वास था कि यह उन्हें पारंपरिक भूमिकाओं (जैसे कि "महिला–उन्मुख" व्यवसाय) की सीमाओं से ऊपर उठने में सक्षम बनाता है।

3. प्रेरणा (Motivation) मकसद ही तय करता है कि दिशा क्या होगी। **आंतरिक प्रेरणा (Intrinsic Motivation):** जैसे किसी क्षेत्र के प्रति जुनून, स्वायत्तता की इच्छा, या कुछ नया सीखने की चाह। यह प्रेरणा गैर–पारंपरिक उद्यमिता को चलाने की सबसे बड़ी शक्ति है, क्योंकि इसमें अक्सर अधिक जोखिम और अनिश्चितता होती है और बाहरी पुरस्कार तुरंत नहीं मिलते। **बाहरी प्रेरणा (Extrinsic Motivation):** जैसे पैसा कमाना, पारिवारिक व्यवसाय को आगे बढ़ाना, या लचीले समय की जरूरत। यह अक्सर पारंपरिक, कम जोखिम वाले व्यवसायों की ओर ले जाती है जहाँ revenue model स्पष्ट और सिद्ध होते हैं।

4. प्रतिबद्धता (Resilience & Grit) उद्यमिता असफलताओं, अस्वीकृति और निरंतर चुनौतियों का एक सिलसिला है। लचीलापन (Resilience): ठोकर खाने के बाद तुरंत उठ खड़े होने की क्षमता। गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में यह और भी ज़रूरी है क्योंकि वहाँ कोई रोल मॉडल या सपोर्ट सिस्टम कम होता है। **दृढ़ता (Grit):** लंबे समय तक अपने लक्ष्य के प्रति जुनून और perseverance बनाए रखना। यह महिलाओं को उन चुनौतियों से निपटने की शक्ति दे रहा था जो गैर–पारंपरिक क्षेत्र में आती हैं, जैसे टेक्निकल बाधाएँ या निवेशकों से होने वाला भेदभाव।

5. आत्म–संदेह और सामाजिक अपेक्षाओं का प्रबंधन (Managing Self-Doubt – Social Expectations) यह शायद सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक बाधा है, जिसे अक्सर (Imposter Syndrome) के रूप में देखा जाता है। आत्म–संदेह (Self-Doubt) "क्या मैं इसे कर पाऊँगी?" क्या मेरे पास पर्याप्त कौशल है? यह संदेह गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में प्रवेश करने से रोकता है, जहाँ महिलाएँ खुद को कमज़ोर पाती हैं। **सामाजिक अपेक्षाएँ (Social Expectations):** समाज अक्सर महिलाओं से "सुरक्षित और उचित" करियर विकल्प चुनने की अपेक्षा रखता है। गैर–पारंपरिक उद्यमिता को समझा नहीं जाता, उस पर सवाल उठाए जाते हैं, या सीधे तौर पर हतोत्साहित किया जाता है। **प्रबंधन करने की क्षमता:** अध्ययन में पाया पाया कि जो महिलाएँ इन आंतरिक और बाहरी आवाज़ों को चुनौती देने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और एक सहायक समुदाय (mentors, peers) बनाने में सक्षम थी, वे ही इन बाधाओं को पार कर पा रही थी।

तालिका 2:- महिलाओं के उद्यमिता अपनाने के निर्णय, में बहिर्मुखता, अनुभव के प्रति खुलापन और कर्तव्यनिष्ठा उद्यमशीलता इरादे के रूप

N=500	पारंपरिक उद्यमिता	गैर-पारंपरिक उद्यमिता	Variance		टी–परीक्षण (दोनों समूहों की तुलना)		एफ–परीक्षण (विचरण की तुलना)	
	मुख्य परिणाम		पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं का विचरण = 171.81	गैर–पारंपरिक, उद्यमी महिलाओं का विचरण = 57.81	टी–मान = 13-97	पी–मान =<0-00000001 (अत्यधिक महत्वपूर्ण)	एफ –मान = 2.97	पी –मान = 0.105 (गैर – महत्वपूर्ण)
बहिर्मुखता,	114.86	34.87						
खुलापन,	110.4	21.6	टी–परीक्षण के परिणाम 13.97 पी–मान = (<0.00000001 अत्यधिक महत्वपूर्ण) दर्शाते हैं कि अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एफ–परीक्षण 2.97 पी–मान = 0.105 (गैर–महत्वपूर्ण दर्शाता है कि दोनों समूहों के विचरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, यानी परिणाम स्थिर और विश्वसनीय हैं।					
विक्षिप्तता,	103.74	73.36						
कर्तव्यनिष्ठा और सहमति	110.4	80.63						

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

ग्राफ 2:- महिलाओं के उद्यमिता अपनाने के निर्णय, में बहिर्मुखता, अनुभव के प्रति खुलापन और कर्तव्यनिष्ठा उद्यमशीलता इरादे के रूप

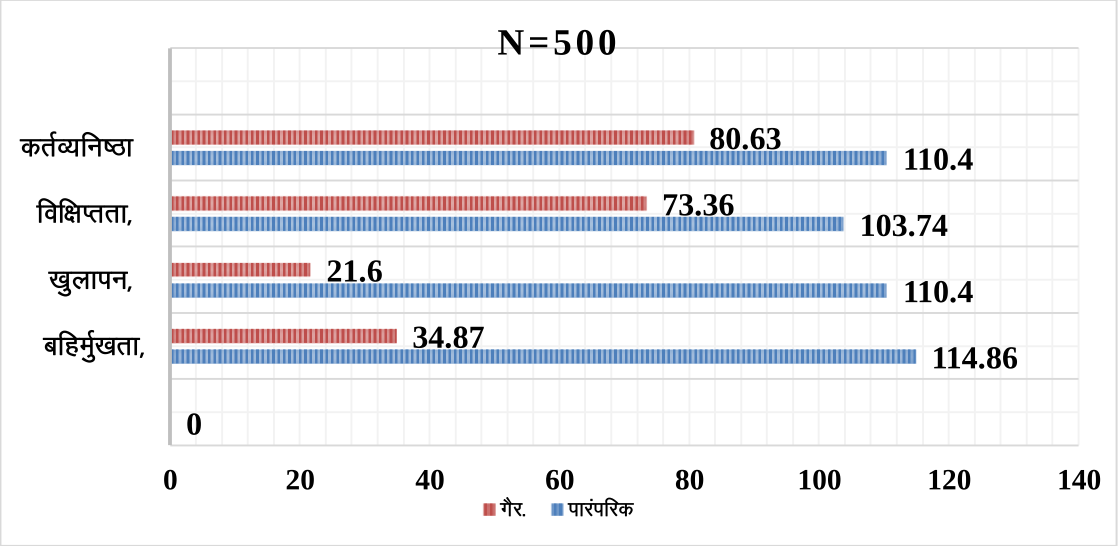

सांख्यिकी डेटा विश्लेषण:

जैसा कि तालिका 2 में दिखाया गया है, पारंपरिक उद्यमी व्यवसायों को अपनाने वाली महिलाओं के खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा और सहमति के लक्षण उद्यमशीलता के प्रयासों के लिए अधिक अनुकूल थे गैर–पारंपरिक, उद्यमी व्यवसायों को अपनाने वाली महिलाओं के अनुपात में। शोध परिणाम से स्पष्ट संकेत मिला है कि व्यक्तित्व के पाँच–कारक मॉडल (FFM) को अपनाने वाली महिलाओं में महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ा। औसत मूल्य दर्शाते हैं कि योग समूह के सभी पैरामीटर काफी बेहतर हैं। टी–परीक्षण के परिणाम 13.97 पी–मान = (<0.00000001 अत्यधिक महत्वपूर्ण) दर्शाते हैं कि अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। एफ–परीक्षण 2.97 पी–मान = 0.105 (गैर–महत्वपूर्ण दर्शाता है कि दोनों समूहों के विचरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, यानी परिणाम स्थिर और विश्वसनीय हैं। अध्ययन से प्राप्त सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, अध्ययन के लिए विचार की गई परिकल्पना सांख्यिकीय आंकड़ों के दृष्टिकोण से सिद्ध होती पाई गई है। शोध अध्ययन से प्राप्त स्टैटिकल डाटा इस ओर इंगित करते हैं कि अध्ययन के लिए मानी गई परिकल्पनाओं को स्टैटिकल डाटा के दृष्टिकोण से हम सिद्ध पाते हैं।

विश्लेषणात्मक व्याख्या; तालिका संख्या 2. के अनुसार:–

इस शोध अध्ययन में उद्यमशीलता के इरादे के संबंध में व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है। पारंपरिक उद्यम व्यवसायों को अपनाने वाली महिलाओं ने बताया कि कुछ लक्षण उद्यमशीलता के प्रयासों के लिए अधिक अनुकूल होते हैं। महिलाओं के लिए, बहिर्मुखता, अनुभव के प्रति खुलापन और कर्तव्यनिष्ठा उद्यमशीलता के इरादे से सकारात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। शोध अध्ययन के परिणामों से पता चला कि बहिर्मुखी महिलाएं मिलनसार, दृढ़निश्चयी और ऊर्जावान पायी गयी, ये गुण उन्हें व्यावसायिक अवसरों की तलाश करने और उनका लाभ उठाने के लिए प्रेरित कर रहे थे। अनुभव के प्रति खुलापन, जो कल्पनाशीलता, बौद्धिक जिज्ञासा और विविधता के प्रति प्राथमिकता से युक्त होता है। शोध अध्ययन में शामिल महिलाओं के अनुसार बहिर्मुखता, उद्यमियों को नए विचारों का पता लगाने और नवाचार करने में सक्षम बनाता है। कर्तव्यनिष्ठा, जिसमें आत्म-नियंत्रण, संगठन और उपलब्धि के लिए प्रेरणा शामिल होती है। उद्यमिता में आवश्यक परिश्रमी योजना और कार्यान्वयन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण ळें इसके विपरीत, शोध परिणाम से संकेत मिला है कि चिंता और उदासी जैसी नकारात्मक भावनाओं का अनुभव शामिल थे, आमतौर पर महिलाओं के उद्यमशीलता के इरादे पर नगण्य या नकारात्मक प्रभाव डालती पायी गयी। जबकि शोध परिणाम से संकेत मिला है कि कर्तव्यनिष्ठा और आत्म-नेतृत्व के बीच एक सकारात्मक संबंध हैं। जिससे नकारात्मक परिणाम कम होते हैं उद्यमशीलता के इरादे पर इसका सीधा प्रभाव अक्सर सीमित होता है। परोपकारिता और सहानुभूति से युक्त सहमति का उद्यमशीलता के इरादे से नगण्य या नकारात्मक संबंध भी होता है। क्योंकि उद्यमियों को अक्सर प्रतिस्पर्धी और आत्म-केंद्रित होने की आवश्यकता होती है। आत्म-नेतृत्व, जिसे किसी व्यक्ति की वांछित लक्ष्यों और कार्यों की ओर स्वयं को निर्देशित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है, व्यक्तित्व लक्षणों और उद्यमशीलता के इरादे के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। इसमें व्यवहारिक रणनीतियाँ जैसे आत्म-अवलोकन, आत्म-लक्ष्य निर्धारण प्राकृतिक पुरस्कार रणनीतियाँ (कार्यों के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना) और रचनात्मक विचार पैटर्न रणनीतियाँ (विचार पैटर्न में सुधार) आत्म-नेतृत्व और प्रेरणा को अपनाने वाली महिलाओं में पाया गया। जिन महिलाओं में मजबूत आत्म-नेतृत्व कौशल थे वे

खुद को सक्षम, आत्म-प्रेरित और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम मान रही थीं। जो सीधे उनके उद्यमशीलता के उत्साह को प्रभावित कर रहा था। प्रेरणा और प्रतिबद्धता भी महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रेरक हैं। महिला उद्यमी अक्सर 'धक्का- और खींच' दोनों कारकों से प्रेरित होती हैं। इस शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि दबाव कारकों में बेरोज़गारी जैसी नकारात्मक परिस्थितियाँ या पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को संतुलित करने के लिए लचीले कामकाजी घंटों की इच्छा शामिल है। दूसरी ओर दबाव कारक सकारात्मक आकांक्षाएँ हैं जैसे स्वतंत्रता, आत्म-पूर्ति, अपना मालिक बनने की इच्छा और रचनात्मक अभिव्यक्ति की खोज। उपलब्धि, प्रशंसा और सकारात्मक प्रतिष्ठा बनाए रखने की इच्छा भी प्रबल प्रेरक के रूप में कार्य कर रहे थे। इन प्रेरकों के बावजूद महिला उद्यमियों को मनोवैज्ञानिक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा था। आत्म-संदेह और धोखेबाज़ी महत्वपूर्ण बाधाएँ थीं जहाँ महिलाएँ अपनी उपलब्धियों के बावजूद खुद को अपर्याप्त महसूस कर रही थी। सामाजिक अपेक्षाएँ और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ भी दबाव पैदा करती हैं और अलगाव या भेदभाव की भावनाओं को जन्म देती हैं। इन पर विजय पाने के लिए मनोवैज्ञानिक लचीलापन विकसित करना आवश्यक है। इसमें मज़बूत समर्थन नेटवर्क बनाना एक विकास मानसिकता को अपनाना शामिल है जो असफलताओं को सीखने के अवसर के रूप में देखती है, और आत्म-देखभाल को प्राथमिकता देती है।

समग्र निष्कर्ष:

पारंपरिक और गैर–पारंपरिक उद्यमिता के बीच चुनाव को अपनाने वाली महिलाओं को मनोवैज्ञानिक कारक न केवल उद्यमी बनने के निर्णय को प्रभावित करते हैं, बल्कि उद्यमिता के प्रकार को भी प्रभावित करते हैं। दृढ़ कर्तव्यनिष्ठा और स्थिरता की चाह रखने वाली महिलाएं पारंपरिक व्यावसायिक मॉडलों की ओर आकर्षित होती हैं, जहाँ स्थापित रास्ते और पूर्वानुमेय परिणाम अधिक आम हैं। संगठन और योजना पर उनका ध्यान पारंपरिक उद्यमों के साथ अच्छी तरह मेल खाता है। गैर–पारंपरिक उद्यमिता अनुभव के प्रति खुलेपन और बहिर्मुखता वाली महिलाएँ गैर–पारंपरिक या नवोन्मेषी उपक्रमों की ओर अधिक झुकाव रखती हैं। अस्पष्टता, रचनात्मकता और सोचे–समझे जोखिम उठाने की उनकी इच्छा उन्हें नए बाज़ारों की खोज, नए उत्पाद विकसित करने या उभरते उद्योगों में प्रवेश के लिए उपयुक्त बनाती है। व्यक्तित्व की चाह और "अपना रास्ता खुद बनाने की चाह" अक्सर महिलाओं को अपरंपरागत व्यावसायिक दृष्टिकोणों की ओर ले जाती है। हालाँकि, बढ़ती शैक्षिक पहुँच और वैश्विक स्तर पर बदलती अपेक्षाएँ अधिक महिलाओं को विविध व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रवेश करने में सक्षम बना रही हैं, जिनमें पारंपरिक रूप से पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र भी शामिल हैं। तनाव को प्रबंधित करने और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने की क्षमता, जो अक्सर आत्म–नेतृत्व द्वारा समर्थित होती है, इन प्रतिस्पर्धी वातावरणों में महत्वपूर्ण हो जाती है। अंततः, इन मनोवैज्ञानिक कारकों का परस्पर प्रभाव उद्यमशीलता के क्षेत्र में एक महिला के झुकाव, दृढ़ता और सफलता को निर्धारित करता है, चाहे वह पारंपरिक या गैर–पारंपरिक मार्ग चुनती हो।

सुझावं:-

एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक आत्म–प्रभावकारिता है, जो किसी व्यक्ति के विशिष्ट प्रदर्शन उपलब्धियों को उत्पन्न करने के लिए आवश्यक व्यवहारों को निष्पादित करने की अपनी क्षमता में विश्वास को संदर्भित करता है। उच्च आत्म–प्रभावकारिता वाली महिलाएं चुनौतियों को अवसर के रूप में देखने और बाधाओं का सामना करने में दृढ़ रहने की अधिक संभावना रखती हैं, जिससे उनका झुकाव गैर–पारंपरिक उपक्रमों की ओर अधिक होता है जिनमें अक्सर उच्च जोखिम और अनिश्चितता शामिल होती है। इसके विपरीत, कम आत्म–प्रभावकारिता महिलाओं को अधिक स्थापित, पारंपरिक व्यावसायिक मॉडल की ओर ले जाती है जहाँ कथित जोखिम कम होते हैं और रास्ते स्पष्ट होते हैं। बांडुरा (1997) द्वारा किए गए शोध में उद्यमशीलता के प्रयासों सहित मानवीय एजेंसी और व्यवहार पर आत्म–प्रभावकारिता के प्रभाव का विस्तार से विवरण दिया गया है। एक अन्य महत्वपूर्ण कारक जोखिम धारणा और सहनशीलता है। महिलाओं की जोखिम की धारणा सामाजिक कंडीशनिंग, सांस्कृतिक मानदंडों और व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित होती है। अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाएं, औसतन, पुरुषों की तुलना में अधिक जोखिम से बचती हैं उदाहरण के लिए, एक महिला जिसने वित्तीय अस्थिरता का अनुभव किया है, वह जोखिम से अधिक विमुख होती है, जबकि एक मजबूत समर्थन प्रणाली वाली महिला गैर–पारंपरिक उद्यम की अनिश्चितताओं को स्वीकार करने के लिए अधिक इच्छुक हो सकती है।

अनुशंसाएं:-

- लक्षित आत्म–प्रभावकारिता निर्माण कार्यक्रम विकसित करें इन कार्यक्रमों में व्यावहारिक कौशल प्रशिक्षण, सफल गैर–पारंपरिक महिला उद्यमियों से मार्गदर्शन और अनुभवात्मक शिक्षा के अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। व्यवसाय नियोजन, वित्तीय साक्षरता और प्रौद्योगिकी अपनाने पर कार्यशालाएँ आत्मविश्वास को काफ़ी बढ़ा सकती हैं। उदाहरण के लिए, एक कार्यक्रम में तकनीकी स्टार्टअप में रुचि रखने वाली महिलाओं के लिए कोडिंग और ऐप विकास पर कार्यशालाओं की एक श्रृंखला शामिल होती है, साथ ही महिला तकनीकी संस्थापकों से मार्गदर्शन भी।
- सकारात्मक जोखिम लेने और लचीलेपन को बढ़ावा दें शैक्षिक पहलों को जोखिम को नवाचार के एक अंतर्निहित हिस्से के रूप में पुनर्परिभाषित करना चाहिए और इसे कम करने और प्रबंधित करने की रणनीतियों पर प्रकाश डालना चाहिए।
- मज़बूत सहकर्मी सहायता नेटवर्क और मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित करे ऐसे प्लेटफ़ॉर्म बनाना जहाँ महत्वाकांक्षी और वर्तमान महिला उद्यमी जुड़ सकें, अनुभव साझा कर सकें और आपसी सहयोग प्रदान कर सकें, बेहद ज़रूरी है। औपचारिक मेंटरशिप कार्यक्रम, अनुभवी गैर–पारंपरिक उद्यमियों को प्रशिक्षित लोगों के साथ जोड़कर, अमूल्य मार्गदर्शन और भावनात्मक प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं।

- लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती दें और विविध रोल मॉडल को बढ़ावा दें जन जागरूकता अभियानों और शैक्षिक पाठ्यक्रमों को उद्यमिता में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को सक्रिय रूप से चुनौती देनी चाहिए। मीडिया, सम्मेलनों और स्कूल कार्यक्रमों के माध्यम से गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में सफल महिलाओं को प्रदर्शित करने से युवा पीढ़ी प्रेरित हो सकती है।
- अनुकूलित वित्तीय और कानूनी संसाधनों तक पहुँच प्रदान करें हालाँकि यह पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक नहीं है, फिर भी महिलाओं के अनुकूल वित्तपोषण विकल्प, अनुदान और कानूनी सलाह की उपलब्धता गैर–पारंपरिक उद्यमों से जुड़ी कथित बाधाओं और चिंताओं को काफी हद तक कम करती है। यह व्यावहारिक समर्थन अप्रत्यक्ष रूप से मनोवैज्ञानिक तत्परता को बढ़ावा दे सकता है।
- प्रारंभिक स्कूली शिक्षा में उद्यमशीलता शिक्षा को शामिल करें रचनात्मकता, समस्या–समाधान और लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कम उम्र से ही उद्यमशीलता की अवधारणाओं और कौशलों का परिचय देना, लड़कियों के लिए उद्यमिता के विचार को सामान्य बनाने और उन्हें पारंपरिक करियर पथों से परे सोचने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद कर सकता है। इसमें परियोजना–आधारित शिक्षा शामिल हो सकती है जहाँ छात्राएँ अपने स्वयं के नवीन विचारों को विकसित और प्रस्तुत करती हैं।
- लक्षित हस्तक्षेपों और सहायक पारिस्थितिकी प्रणालियों के माध्यम से इन मनोवैज्ञानिक कारकों का समाधान करके, हम अधिक महिलाओं को गैर–पारंपरिक उद्यमशीलता के उपक्रमों को चुनने और उनमें सफल होने के लिए सशक्त बना सकते हैं, जिससे नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. Alba, A. (2025). Supporting female non-traditional student populations in higher education: Exploring the experiences of instructors and instructional leaders. Dissertation. https://scholarsarchive.byu.edu/etd/10740
2. Adeoye-Olatunde, O. A., Olenick, N. L. (2021). Research and scholarly methods: semi-structured interviews. JACCP: Journal of the American College of Clinical Pharmacy, 4(10), 1358-1367. https://doi.org/10.1002/jac5.1441.
3. Amina, T. (2021). Online education and women empowerment. Oxford Research Encyclopedia of Education. https://oxfordre.com.
4. Ahmad, A., Higgs, H., Ng, C., & Delaney, D. A. (2018). Determinants of female representation on corporate boards: Evidence from Australia. Journal of Accounting Research, 31(3), pp. 10.110.https://doi.org/10.1108/ARJ11-2015-0133
5. Abdullah, S. N., Ku Ismail, K. N. I., Nachum, L. (2016). Does having women on boards create value? The influence of social perceptions and corporate governance in emerging markets. Strategic Management Journal, 37(3), https://doi.org/10.1002/smj.2352
6. Al-Dajani, H., Marlow, S. (2010). The impact of women's home-based enterprises on family dynamics: Evidence from Jordan. International Small Business Journal 28(5): 470–486.
7. Brieger, S. A., Francoeur, C., Welzel, C., Ben-Amar, W. (2019). Empowerment of women: The role of emancipatory forces in board gender diversity. Journal of Business Ethics, 155(2), pp. 10.1007. https://doi.org/10.1007/s10551- 017-3489-3
8. Bertrand, M., and Hallock, K. F. (2001). Gender gaps in top corporate jobs. Industrial and Labor Relations Review, 55(1), https://doi.org/10.2307/2696183
9. Burke, R. J., Mattis, M. C. (2000). Women on corporate boards of directors: Where do we go now? In R. J. Burke and M. C. Mattis (eds.), Women on corporate boards of directors. Issues in business ethics (Volume 14). Springer. ISSN 10. https://doi.org/10.1007/978-90-481-3401-4_1
10. Cameron, A. C., and Trivedi, P. K. (2005). Microeconometrics: Methods and Applications. Cambridge University Press. https://doi.org/10.1017/CBO978051181124110.1017/CBO9780511811241
11. D. A., Simkins, B. J., Simpson, W. G. (2003). Corporate governance, board diversity and firm value. Financial Review, 38(1), https://doi.org/10.1111/1540-6288.00034
12. Li, W., & Castañeda-Navarrete, J. (2025). Gender diversity in the boardroom: Progress and organizational determinants in China and India, 2015-2020. Business and Society Review, 130(2), https://doi.org/10.1111/basr.70009
13. M.J. Muassar, J., Zamir, S., Zumakulov, K., Kunduzova. (2024) Improving the scientific basis for the development of non-traditional employment forms in the conditions of an innovative economy, Journal of Human Resources (Natural Sciences) 51(12) DOI:10.1080/00036846.2011.554377
14. Morris, T., Sodjahin, A., Boubacar, H. (2021). Ownership structure and women on boards of directors of Canadian listed companies. Corporate Ownership and Control, 18(3), 120–135 https://doi.org/10.22495
15. Mustafa, A., Saeed, A., Awais, M., & Aziz, S. (2020). Board-gender diversity, family ownership and dividend declaration: Evidence from Asian emerging economies. Journal of Risk and Financial Management, 13(4), https://doi.org/10.3390/jrfm13040062

16. Sarkar, J., & Selarka, E. (2021). Women on the boards of family firms and their performance: Evidence from India. Emerging Markets Review, 46, 100770. ISSN 1016-87390 https://doi.org/10.1016/j.ememar.2020.100770
17. Saeed, A., Youssef, A., & Alharbi, J. (2017). Family and state ownership, internationalization and corporate board-gender diversity: Evidence from China and India. Cross Cultural and Strategic Management, 24(2), pp. 10.21. https://doi.org/10.1108/CCSM-11-2015-0159
18. Shinnar, R., Hsu, D. and Powell, B. (2014). Longitudinal evaluation of the impact of entrepreneurship education on self-efficacy, entrepreneurial intentions and gender. International Journal of Management Education, 12, 561-570. ISSN 10.1016/NREM.2014.09.005